www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शुक्रवार 31 मई 2019

दैनिक जागरण

शब्दकोश से असंभव शब्द निकालने से ही सफलता मिलती है

नई सरकार

एक महोत्सव जैसे आयोजन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके अनेक सहयोगियों की ओर से शपथ लेने के साथ ही मोदी सरकार की दूसरी पारी का शुभारंभ हो रहा है। यह शुभारंभ जैसे खुशनुमा माहौल में और प्रमुख विपक्षी नेताओं के साथ-साथ आम लोगों एवं जानी-मानी हस्तियों की उपस्थिति के बीच शुरू हुआ उससे देश के साथ दुनिया भी भारतीय लोकतंत्र की महिमा और गरिमा से परिचित हुई। लोकतंत्र का मूल और मंतव्य यही है कि चुनावों के दौरान पक्ष-विपक्ष एक-दूसरे से बेहतर जनसेवक साबित करने की चेष्टा करें और फिर जनता के फैसले को स्वीकार कर देश की प्रगति के लिए मिलजुलकर काम करें। अच्छा होता कि विपक्ष के वे नेता शपथग्रहण समारोह का बहिष्कार करने से बचे होते जिन्होंने इस मौके पर भी दलगत राजनीति को महत्व देते हुए इस समारोह से अपने को दूर रखा। यह सही है कि भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने प्रचंड बहुमत हासिल कर जनता की अपेक्षाएं बढ़ा ली हैं, लेकिन लोकतंत्र एक सजग-सचेत विपक्ष की भी मांग करता है। भले ही इस लोकसभा में विपक्ष पिछली बार के मुकाबले संख्याबल में कम हो, लेकिन अगर वह जनहित एवं राष्ट्रहित को प्राथमिकता दे और सकारात्मक रवैये का प्रदर्शन करे तो अपनी सार्थकता एवं महत्ता सिद्ध कर सकता है। उसे करना भी चाहिए। राष्ट्रीय महत्व के मसलों पर सत्तापक्ष और विपक्ष, दोनों से यही अपेक्षा की जाती है कि वे दलगत हितों से परे हटकर काम करें। विभिन्न मसलों पर पक्ष-विपक्ष में मतभेद होने स्वाभाविक हैं, लेकिन लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतभेदों के बीच ही सहमति कायम करनी होती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बार-बार यह कहते रहे हैं कि सरकार तो बहुमत से बनती है, लेकिन देश सबकी सहमति से चलता है। उनके इस कथन पर विपक्षी दलों की राय जो भी हो, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज के दौर में जब देश बदल रहा है और उसकी अपेक्षाएं बढ़ रही हैं तब राजनीति के तौर-तरीकों में बुनियादी बदलाव की सख्त जरूरत है। सबसे अधिक जरूरत संसदीय काम-काज में बदलाव लाने की है। इस बदलाव से राजनीति का भी भला होगा। पुराने, घिसे-पिटे और निष्प्रभावी तौर-तरीकों के कारण ही भारतीय लोकतंत्र श्रेष्ठ रूप नहीं ले पा रहा है। निःसंदेह भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन जरूरत तो इसकी है कि वह श्रेष्ठ एवं सशक्त लोकतंत्र बने। नई सरकार के नेतृत्व में इस लोकसभा को ऐसा कुछ करना ही चाहिए जिससे श्रेष्ठ लोकतांत्रिक परंपराओं को सहजता से अपनाया जा सके। जहां तक मोदी सरकार के मंत्रियों की बात है, चूंकि केंद्रीय मंत्रिपरिषद के सदस्यों की कुल संख्या 81 हो सकती है इसलिए आने वाले समय में कुछ और मंत्री भी शपथ ले सकते हैं। सभी मंत्रियों के शपथ लेने और उनके विभागों के बंटवारे के बाद ही उसकी क्षमता और योग्यता का सही मूल्यांकन किया जा सकता है, लेकिन इतना तो है ही कि अमित शाह के मंत्री बनने से मोदी सरकार एक सक्षम प्रशासक से लैस होने जा रही है। मंत्रिपरिषद में उनके साथ कुछ और नए चेहरों की उपस्थिति नई सरकार को और प्रभावी बनाने एवं बेहतर परिणाम देने वाली बननी चाहिए।

कठोर प्रहार जरूरी

झारखंड के सरायकेला-खरसावां जिले में नक्सलियों द्वारा सुरक्षा बलों पर किए गए हालिया हमले में 26 जवान जख्मी हुए हैं। स्पष्ट है कि राज्य में माओवादियों के हौसले फिर बुलंद हो रहे हैं। संदेश साफ है कि नक्सलियों पर नकेल कसने की सफलता पर संतुष्ट होकर नहीं बैठा जा सकता। इसकी कतई अनदेखी नहीं की जा सकती कि नक्सली मौका मिलते ही दोबारा उठ खड़ा होने में देर नहीं लगाते। पलटवार को सही समय का इंतजार करते हैं। इसलिए पड़ताल होनी चाहिए कि नक्सली संगठन आधुनिक हथियार एवं विस्फोटक कहां से और कैसे हासिल कर ले रहे हैं? यह काम प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए कि उन तक हथियार एवं दूसरे संसाधन नहीं पहुंच सकें। इसलिए जरूरी है कि राज्य में लाल आतंक पर कड़ा प्रहार किया जाए। यदि दलों या संगठनों की नक्सलियों के साथ किसी भी रूप में संलिप्तता पाई जाती है तो उनके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई करने में कोताही नहीं होनी चाहिए। शासन-प्रशासन को ध्यान देना होगा कि नक्सलियों के खिलाफ अभियान में सुरक्षा बलों को कैसे जरूरी संसाधनों से लैस रखते हुए और अधिक सक्षम बनाया जाए। नक्सलियों के खिलाफ मोर्चा संभाले केंद्रीय सुरक्षा बलों एवं स्थानीय पुलिस के बीच संवाद एवं समन्वय को और प्रभावी बनाए जाने की आवश्यकता है। खुफिया तंत्र को और सक्रिय करते हुए नक्सलियों से जनता को दूर रखने या करने की कवायद तेज करनी होगी। प्रभावित इलाकों में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक विकास पहुंचा कर भी लाल आतंक की जड़ें खत्म की जा सकती हैं। हमें जनमानस को यह संदेश भी देना होगा कि नक्सली विकास विरोधी होते हैं और भोले-भाले लोगों को बरगलाने का काम करते हैं। वह नहीं चाहते कि गांवों तक विकास पहुंचे। सड़क निर्माण को रोकना, स्कूल भवनों को ध्वस्त करना, संचार सेवा को बाधित करना, ठेकेदारों को धमकाना जैसे कई कदम यह बताने के लिए काफी हैं कि नक्सलियों का गांव-गरीब के हित से कोई लेना-देना नहीं।

चुनावी रणनीति के शहंशाह

प्रदीप सिंह

अमित शाह से पहले किसी पार्टी के संगठन के सामाजिक आधार को इतना व्यापक बनाने का काम कभी किसी और नेता ने नहीं किया

आने वाले समय में राजनीतिशास्त्री जब भी चुनावी रणनीति पर शोध करेंगे तो अमित शाह का नाम रणनीति के शहंशाह के तौर पर आएगा। उनकी सफलता अध्ययन का विषय बन गई है। यह बात केवल इस आधार पर नहीं कही जा रही कि भाजपा को लगातार दूसरी बार लोकसभा में बहुमत मिला और पांच साल में पार्टी ने 16 चुनाव जीते। चुनाव में भाजपा और उसके नेतृत्व वाले राजग की प्रचंड जीत एक मुद्दा है, लेकिन पांच साल में किसी पार्टी के संगठन के सामाजिक आधार को इतना व्यापक बनाने का काम कम से कम अपने देश में तो इससे पहले कभी किसी नेता ने नहीं किया। भारतीय राजनीति खासतौर से भाजपा की राजनीति में अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी की जोड़ी की हमेशा चर्चा होती है। नरेंद्र मोदी और अमित शाह सही मायने में एक-दूसरे के पूरक हैं। आमतौर पर जिन्हें एक-दूसरे का पूरक माना जाता है, उन दोनों में किसी के पास एक तरह के गुण और दूसरे में दूसरी तरह के गुण होते हैं, लेकिन मोदी और शाह के मामले में ऐसा नहीं है। दोनों उत्तम कोटि के संगठनकर्ता हैं। दोनों ही चुनावी और राजनीतिक रणनीति में पारंगत हैं। मोदी इस समय देश ही नहीं शायद दुनिया के सबसे सशक्त वक्ता हैं। दूसरी ओर अमित शाह वैयक्तिक संवाद के उस्ताद हैं। लोकसभा चुनाव में शिवसेना और जनता दल यूनाइटेड से समझौता अमित शाह के ही बस की बात थी। दोनों में एक और समानता है। प्रधानमंत्री संगठन के हित पर राष्ट्रीय हित को तरजीह देते हैं तो अमित शाह संगठन के हित को व्यक्तिगत हित के ऊपर रखते हैं। दोनों ही अपने साथ के लोगों से सौ फीसदी से ज्यादा की उम्मीद रखते हैं, क्योंकि खुद उस पर आचरण करते हैं।

अमित शाह की एक और खूबी यह है कि वह संगठन के हित और विचारधारा से समझौता नहीं करते। राष्ट्रीय नागरिकता विधेयक को लेकर असम और उत्तर पूर्व में हिंसक विरोध हो रहा था। विधेयक लोकसभा से पास हुआ और राज्यसभा में विपक्ष ने रोक दिया। शाह चाहते तो चुनाव तक चुप्पी साध सकते थे, लेकिन चुप्पी साध लेते तो वह अमित शाह नहीं होते। चुप्पी छोड़िए, वह रैली दर रैली कहते रहे कि कुछ भी हो, नागरिकता कानून के मुद्दे से भाजपा पीछे नहीं हटेगी। इतना ही नहीं इस मुद्दे पर नाराज होकर एनडीए से बाहर गई असम गण परिषद को भी उन्होंने मना लिया। पिछले लोकसभा चुनाव में वह पार्टी के महासचिव थे और उत्तर प्रदेश के प्रभारी थे। इसलिए पर्दे के पीछे से चुपचाप अपना काम करते रहे और उत्तर प्रदेश में भाजपा को अकल्पनीय सफलता दिलाई। इस बार वह पार्टी के अध्यक्ष थे। उनके काम करने के तरीके के बारे में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वाराणसी में प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में बताया कि अमित शाह जी रात में दो बजे तक बैठक करते हैं और सुबह छह बजे लोगों को अगले दिन के काम के लिए जगा देते हैं। बहुत से लोगों के मन में एक सवाल उठता है कि आखिर अमित शाह की कामयाबी का मंत्र क्या है? योगी आदित्यनाथ के कथन और शाह की कार्यशाली के आधार पर निष्कर्ष निकालें तो कह सकते हैं कि उनकी सफलता का मंत्र है चरैवेति चरैवेति। रुकने, थकने, और आलस्य जैसे शब्द शायद उनके शब्दकोश में हैं ही नहीं। कम ही लोगों को पता होगा कि इन्हीं अमित शाह के बारे में एक समय भाजपा संसदीय बोर्ड के एक सदस्य ने मोदी की मौजूदगी में कहा था कि आखिर हम अमित शाह को कब तक ढोएंगे? इस सवाल पर मोदी का धैर्य जवाब दे गया था। उन्होंने कहा था, आप लोगों को अंदाजा भी है कि उन्होंने पार्टी के लिए क्या किया और सहा है? आज वही लोग अमित शाह की प्रशंसा में सबसे आगे रहने की कोशिश करते हैं। एक समय था जब भाजपा में अटल-आडवाणी के होते हुए भी कई गुट थे। ऐसा नहीं है कि आज सब लोग पूरी तरह संतुष्ट हैं, लेकिन ऐसे लोगों के लिए समस्या यह है कि उनके पास शिकायत का कोई मौका नहीं है।

इंडिया शाइनिंग नारे के बावजूद 2004 में भाजपा क्यों हार गई थी? इसके कारण तो कई हैं, लेकिन यहां तीन बातों का जिक्र जरूरी है। एक, वाजपेयी के समय सरकार और संगठन एक हो गया था, बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि संगठन सरकार का दरबारी हो गया था। सरकार की उपलब्धियों को आम लोगों तक पहुंचाने का काम भी संगठन ने सरकार पर ही छोड़ दिया था। अमित शाह ने इस बार यह नहीं होने दिया। इसी कारण सरकार और संगठन कदम से कदम मिलाकर चले। दूसरी बात यह कि वाजपेयी सरकार ने आधारभूत ढांचे को सुधारने के लिए बड़े ऐतिहासिक काम किए, लेकिन आम लोग विकास का आकलन इस बात से करते हैं कि उन्हें ठोस रूप में क्या मिला, जो उनके जीवन स्तर को सुधार सके। उज्ज्वला, शौचालय, प्रधानमंत्री आवास, बिजली कनेक्शन और आयुष्मान जैसी योजनाओं ने मतदाताओं की इस इच्छा को पूरा किया।

मोदी-शाह की जोड़ी ने तीसरा अहम काम राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से सर्वांगीण तालमेल करने का किया। इसके लिए बाकायदा एक संस्थानिक व्यवस्था की गई। वाजपेयी सरकार पर आक्रमण में उस समय संघ परिवार कांग्रेस से भी ज्यादा आक्रामक था। तत्कालीन सरसंघ चालक केएस सुदर्शन, स्वदेशी जागण मंच के दत्तोपंत ठेंगड़ी और विश्व हिंदू परिषद के अशोक सिंघल ने वाजपेयी और उनकी सरकार पर राष्ट्रहित की अनदेखी करने का आरोप सार्वजनिक रूप से लगाया था। पिछले पांच सालों में कभी ऐसा नहीं लगा कि संघ और सरकार अलग-अलग दिशा में चल रहे हैं। सरकार, संगठन और संघ के बीच संवाद सेतु बनाने में किसी एक व्यक्ति की सबसे बड़ी भूमिका रही तो वह अमित शाह की।

अवधेश राजपूत

प्रधानमंत्री सुचारु रूप से शासन चला सकें, इसके लिए अमित शाह ने प्रधानमंत्री को संगठन की समस्याओं से मुक्त रखा। इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि भाजपा के दूसरी और तीसरी पीढ़ी के नेताओं को संगठन का काम करना सिखा दिया। एक नेता ने कहा कि जिसने कुछ समय अमित शाह के साथ काम कर लिया या करते देख लिया वह विधायक का चुनाव हार ही नहीं सकता। वह उम्मीदवारों को यहां तक बताते हैं कि पैसा कैसे, किस काम पर और कब खर्च करें। उम्मीदवारों के चयन के मुख्य रूप से दो ही मानदंड थे। कार्यकर्ता को प्रथामिकता और जीतने की संभावना। इस चुनाव में उन्होंने पार्टी की ओर से उम्मीदवारों को दिए जाने वाले पैसे की परंपरा भी रोक दी। एक और बड़ा काम उन्होंने यह किया कि चुनाव जिताने का फार्मूला ईजाद कर लेने का दावा करने वाले तथाकथित प्रोफेशनल रणनीतिकारों को उनकी हैसियत बता दी। उन्होंने बता दिया कि चुनाव में जीत और हार सिर्फ पार्टी और नेताओं की होती है। चूंकि बीते पांच साल में उन्होंने कई कठिन लक्ष्य हासिल किए इसलिए उनके मंत्री बन जाने पर बहुत से लोग उनके बिना भाजपा के संगठन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

सेहत के लिए संकट बने तंबाकू उत्पाद

डॉ. सूर्यकांत

तंबाकू उत्पादों से जो राजस्व मिलता है, उससे कई गुना राशि तंबाकू जनित बीमारियों के इलाज में खर्च हो जाती है

जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड इन सर्विसेज के अनुसार भारत में लगभग 27 करोड़ लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। भारत में तंबाकू के कारण प्रतिवर्ष लगभग 12 लाख लोगों की मृत्यु होती है। यहां तंबाकू सेवन प्रारंभ करने की औसत आयु 18.7 वर्ष है। महिलाओं की तुलना में पुरुष कम उम्र में तंबाकू का सेवन करना प्रारंभ कर देते हैं। तंबाकू के कारण 25 तरह की बीमारियां तथा लगभग 40 तरह के कैंसर हो सकते हैं, जिसमें प्रमुख हैं-मुंह का कैंसर, गले का कैंसर, फेफड़े का कैंसर, प्रोस्टेट का कैंसर, पेट का कैंसर, ब्रेन ट्यूमर आदि। हमारे देश में लगभग 12 करोड़ लोग धूम्रपान करते हैं। विकसित देशों में धूम्रपान के विषय में जागरूकता के परिणामस्वरूप धूम्रपान का औसत गिरता जा रहा है, लेकिन गरीब और विकासशील देशों में अभी भी धूम्रपान के संबंध में चेतना की कमी है। इस वर्ष के विश्व तंबाकू निषेध दिवस की थीम तंबाकू और फेफड़े का स्वास्थ्य है। आज अधिकांश बीमारियों के पीछे तंबाकू की लत एक बड़ी वजह है। तंबाकू से निर्मित उत्पादों के सेवन से न सिर्फ व्यक्तिगत, शारीरिक एवं बौद्धिक ह्रास हो रहा है, अपितु समाज पर भी इसके दूरगामी सामाजिक, आर्थिक दुष्प्रभाव दिखाई देने लगे हैं।

गौरतलब है कि 16वीं शताब्दी में अकबर के शासन में पुर्तगाली पहली बार तंबाकू लेकर भारत आए थे। बाद में जहांगीर के शासनकाल में इसके उपभोग को नियंत्रित करने के लिए इस पर भारी कर लगाया गया, पर सदियां बीत गईं और तंबाकू व्यापार एवं उपभोग पर प्रभावी अंकुश नहीं लग पाया। तंबाकू के धुएं से 500 हानिकारक गैसें एवं 7000 अन्य रासायनिक पदार्थ निकलते हैं, जिनमें निकोटीन और टार प्रमुख हैं। शोध में 70 रासायनिक पदार्थ कैंसरकारी पाए गए हैं। सिगरेट की तुलना में बीड़ी ज्यादा नुकसानदायक होती है। बीड़ी में निकोटीन की मात्रा कम होने के कारण निकोटीन की लत के शिकार लोगों को इसकी आवश्यकता बार-बार पड़ती है। हमारे देश में महिलाओं की अपेक्षा पुरुष अधिक धूम्रपान करते हैं। जब कोई धूम्रपान करता है तो बीड़ी या सिगरेट का 30 प्रतिशत धुआं उस पीने वाले के फेफड़े में जाता है एवं 70 प्रतिशत आसपास के वातावरण में रह जाता है, जिससे परिवार के लोग और उसके मित्र प्रभावित होते हैं, जिसको हम परोक्ष धूम्रपान कहते हैं। विश्व भर में होने वाली मृत्यु में 50 प्रतिशत मौतों का कारण धूम्रपान है। धूम्रपान के परिणामस्वरूप रक्त का संचरण प्रभावित हो जाता है, ब्लड प्रेशर की समस्या हो जाती है, सांस फूलने लगती है और नित्य क्रियाओं में भी अवरोध आने लगता है। धूम्रपान से होने वाली प्रमुख बीमारियां हैं-ब्रांकाइटिस, एसिडिटी, टीबी, ब्लडप्रेशर,

हार्ट अटैक, फॉलिज, नपुंसकता, माइग्रेन, सिरदर्द, बालों का जल्दी सफेद होना आदि। यदि महिलाएं गर्भावस्था के दौरान परोक्ष या अपरोक्ष रूप से धूम्रपान करती हैं तो उनके होने वाले नवजात शिशु का वजन कम होना, गर्भाशय में ही या पैदा होने के बाद मृत्यु हो जाना और पैदाइशी बीमारियां होने आदि का खतरा बना रहता है।

बीड़ी या सिगरेट के धुएं में मौजूद निकोटीन जैसे विषैले तत्व हमारे मस्तिष्क में लगभग 10 से 19 सेकेंड में पहुंच जाते हैं, जिससे न्यूरोट्रांसमीटर्स का अधिक स्राव होने लगता है, जो कि हमारे लिए हानिकारक है। इसके कारण हमारी सोच तथा हमारी कार्यप्रणाली में बदलाव होने लगता है। यह सब केवल कुछ समय के लिए ही होता है, क्योंकि निकोटीन का असर आधे घंटे से दो घंटे तक रहता है। इसके बाद आपको पुनः इसकी जरूरत महसूस होने लगती है। लोगों में धूम्रपान करने के बहुत से कारण हैं जैसे कि उत्तेजना, इसका स्वाद जानने की इच्छा एवं चिंता से मुक्ति आदि। कुछ लोग इसे वैभव का भी प्रतीक मानते हैं, परंतु जब एक बार आप धूम्रपान करने लगते हैं तो आपको इसकी लत लग जाती है। धूम्रपान बंद करने से फायदे ही फायदे हैं। धूम्रपान बंद करने के एक वर्ष के भीतर दिल की बीमारियों की आशंका 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। फेफड़े का कैंसर होने की संभावना 10 से 15 वर्षों में 50 प्रतिशत तक कम हो जाती है। शरीर में रक्त का संचार सुचारू रूप से होने लगता है और शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा अच्छी हो जाती है। ब्रांकाइटिस एवं श्वसन तंत्र के अन्य रोगों की संभावना भी काफी कम हो जाती है। थकान कम होती है और मन प्रसन्न रहता है और आत्म विश्वास भी बढ़ता है।

तंबाकू सेवन से हो रहे दुष्प्रभावों को देखते हुए पूर्व में भारत सरकार ने कुछ व्यापक कदम उठाए हैं। सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम 2003 के अंतर्गत तंबाकू या उससे बने पदार्थों का प्रचार-प्रसार, खरीद-फरोख्त एवं वितरण पर सख्ती से रोक लगाने की बात कही गई थी। 2004 में विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर इस कानून को कार्यान्वित किया गया। वहीं विश्व समुदाय के लोग भी इस गंभीर विषय पर एकजुट हैं। इसके लिए वर्ष 1994 में एक विश्व संगोष्ठी में सुझाव दिया गया था कि धूम्रपान वाले उत्पादों पर टैक्स की बढ़ोतरी कर देनी चाहिए। इससे तंबाकू उत्पादों पर बढ़े कराधान से उपजी मूल्य वृद्धि से उनके उपभोग में कमी आएगी। लोगों की सेहत पर मंडराता खतरा कुछ हद तक कम होगा। सरकार को अधिक राजस्व प्राप्त होगा, जिसका प्रत्यक्ष उपयोग तंबाकू के खिलाफ जागरूकता पैदा करने और तंबाकू जनित रोगों से पीड़ित लोगों के उपचार और पुर्नवास में किया जाना चाहिए।

दुख की बात है कि तंबाकू के व्यवसाय में भारत काफी अग्रणी है। विश्वभर में तंबाकू के उत्पाद एवं उपयोग के संबंध में भारत दूसरे स्थान पर है। तंबाकू के दुष्प्रभावों को देखते हुए इसके उत्पादन तथा ब्रिकी दोनों पर रोक लगाना ही एकमात्र उपाय है, लेकिन इसके लिए दो कुतर्क दिए जाते है कि तंबाकू उत्पाद से लगभग तीन करोड़ लोगों को रोजगार मिला हुआ है और इससे काफी राजस्व की प्राप्ति होती है। राजस्व की प्राप्ति एक मिथक ही है, क्योंकि भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के वर्ष 2015-16 के आंकड़ों के अनुसार तंबाकू के उत्पादों से प्रतिवर्ष 31,000 करोड़ रुपये अर्जित होते हैं, जबकि हम 1,04,500 करोड़ रुपये तंबाकू के दुष्प्रभावों से हो रही प्रमुख बीमारियों पर ही खर्च कर देते हैं। जाहिर है कि तंबाकू नुकसान के कहीं अधिक हैं और इसीलिए उसे एक अभिशाप कहा जाता है।

(लेखक किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय, लखनऊ में रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

कर्मफल

जीवन एक यात्रा है। शरीर का अंत हो जाता है, लेकिन आत्म तत्व का नहीं। आत्म तत्व प्रत्येक जन्म में अपनी यात्रा करता है। नई काया, नए माता-पिता, नई जगह, नए नाम और पूर्व संस्कारों से प्राप्त कुछ विकारों को लेकर इस आत्म तत्व की यात्रा चलती रहती है। कुछ गुण तो कुछ दुर्गुणों की मिलावट के साथ एक नई यात्रा पुनः प्रारंभ होती है। इस संपूर्ण यात्रा में हमारा ध्येय कर्म करना है। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने कहा है कि यह विश्व कर्म प्रधान है। इसलिए मनुष्य को कर्म करना ही है। हर क्षण कर्म करना है। इस संदर्भ में ध्यान देने वाली बात यह है कि जब हम कर्म नहीं करते तब हमारी इंद्रियां, मस्तिष्क और हमारी कल्पनाएं कार्य करती रहती हैं।

समस्त कर्मों के अच्छे-बुरे स्वरूप के कारण हमें शुभ एवं अशुभ कर्मों का फल भोगना ही होगा। प्रायश्चित करने से और कभी भी पाप न करने की दृढ़ता पर अडिग रहने से आप कर्मफल के नकारात्मक प्रभावों से बच सकते हैं। कर्म का फल अवश्य मिलता है, भले ही यह देर से मिले। जिस अनुपात में हम जैसा भी कर्म करते हैं, उसी अनुपात में हमें फल भी मिलता है। हम जो भी कर्म करते हैं उसका फल अवश्यंभावी है। पूर्वकृत कर्म पीछा नहीं छोड़ते। हमें किसी न किसी जन्म में इन्हें भोगना ही पड़ेगा। अपने कर्मों से ही मनुष्य उठता है और गिरता भी है। हम बचपन से ही यह कहावत सुनते आए हैं, 'बोया पेड़ बबूल का, आम कैसे होय।' फिर भी मानव अगर प्रयत्न करे तो वह अशुभ कर्मों से बच सकता है। ईश्वर से प्रार्थना कर वह अशुभ कर्मों से बचने का प्रयत्न कर सकता है। वेदों का एक प्रमुख सार-तत्व है, 'हे ईश्वर हमें सब बुराइयों से दूरकर अच्छाइयों की ओर प्रवृत्त करो।'

संसार रूपी कर्मभूमि में हम सदैव अच्छे से अच्छे कर्मों को करने का प्रयास करें। हम जब बारंबार प्रार्थना करेंगे एवं शुभ कर्मों को करने के लिए दृढ़ संकल्पित होंगे तो ईश्वर हमारा साथ अवश्य देगा। इस स्थिति में हम शुभ कर्म करेंगे। जब हम शुभ कर्म करेंगे तो फल भी हमें शुभ ही मिलेगा। जब हम अपनी इस जीवन यात्रा को समाप्त कर संसार से विदा लेंगे, तब हमारे साथ कुछ न होगा। यदि कुछ होगा भी तो वे हमारे भले एवं बुरे कर्म ही होंगे, जिनका फल हमें निश्चित रूप से भोगना पड़ेगा।

सरस्वती वर्मा

परिवार का बदलता स्वरूप

देवेंद्रराज सुथार

अनुभव का खजाना कहे जाने वाले बुजुर्गों की असली जगह वृद्धाश्रम नहीं, बल्कि घर है

परिवार से इतर व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है। लोगों से परिवार बनता है और परिवार से समाज और समाज से देश। परिवार दो प्रकार के होते हैं। एक, एकल परिवार और दूसरा, संयुक्त परिवार। भारत में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार की धारणा रही है। संयुक्त परिवार में वृद्धों को संबल प्रदान होता रहा है और उनके अनुभव एवं ज्ञान से युवा एवं बाल पीढ़ी लाभान्वित होती रही है।

संयुक्त पूंजी, संयुक्त निवास एवं संयुक्त उत्तरदायित्व के कारण वृद्धों का प्रभुत्व रहने के कारण परिवार में अनुशासन एवं आदर का माहौल हमेशा बना रहता है, लेकिन बदलते समय में तीव्र औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण एवं उदारीकरण के कारण संयुक्त परिवार की परंपरा चरमराने लग गई है। वस्तुतः संयुक्त परिवारों का बिखराव होने लगा है। एकल परिवारों की जीवनशैली ने दादा-दादी और नाना-नानी की गोद में खेलने एवं लोरी सुनने वाले बच्चों का बचपन छीनकर उन्हें मोबाइल का आदी बना दिया है। उपभोक्तावादी संस्कृति, अपरिपक्वता, व्यक्तिगत आकांक्षा, स्वकेंद्रित विचार, व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि, लोभी मानसिकता, आपसी मनमुटाव और सामंजस्य की कमी के कारण संयुक्त परिवार की संस्कृति छिन्न-भिन्न हुई है। गांवों में रोजगार का अभाव होने के कारण अक्सर एक बड़ी आबादी का विस्थापन शहरों की ओर हो रहा है। शहरों में भीड़भाड़ रहने के कारण बच्चे अपने माता-पिता को चाहकर भी पास नहीं रख पा रहे हैं। यदि रख भी लें तो वे शहरी जीवन के अनुसार खुद को ढाल नहीं पाते हैं। गांवों की खुली हवा में सांस लेने वाले लोगों का शहरी की संकरी गलियों में दम घुटने लगता है।

इसके अलावा पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव बढ़ने के कारण भी आधुनिक पीढ़ी का अपने बुजुर्गों एवं अभिभावकों के प्रति आदर कम होने लगा है। वृद्धावस्था में अधिकतर बीमार रहने वाले माता-पिता अब उन्हें बोझ लगने लगे हैं। वे अपने संस्कारों और मूल्यों से कटकर एकाकी जीवन को ही अपनी असली खुशी एवं आदर्श मान बैठे हैं। देश में 'ओल्ड एज होम' की बढ़ती संख्या इशारा कर रही है कि भारत में संयुक्त परिवारों को बचाने के लिए एक स्वस्थ सामाजिक परिप्रेक्ष्य की नितांत आवश्यकता है। वहीं परिवार के एक-दो सदस्यों पर पूरे घर को चलाने की जिम्मेदारी आने के कारण आपस में हीनभावना पनपने लगी है। इसके अलावा बुजुर्ग वर्ग और आधुनिक पीढ़ी के विचार मेल नहीं खा पा रहे हैं। बुजुर्ग अपने पुराने जमाने के अनुसार जीना पसंद करते हैं तो युवा वर्ग आज की स्टाइलिश लाइफ जीना चाहते हैं। इसी वजह से दोनों के बीच संतुलन की कमी दिख रही है, जो परिवार के टूटने का कारण बन रही है।

यदि संयुक्त परिवारों को समय रहते नहीं बचाया गया तो हमारी आने वाली पीढ़ी ज्ञान संपन्न होने के बाद भी दिशाहीन होकर विकृतियों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर लेगी। अनुभव का खजाना कहे जाने वाले बुजुर्गों की असली जगह वृद्धाश्रम नहीं, बल्कि घर है। ऐसा कौन-सा घर परिवार है जिसमें झगड़े नहीं होते? लेकिन यह मनमुटाव तक सीमित रहे तो बेहतर है। मनभेद कभी नहीं बने।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

सही चित्रण

मुसलमानों को डराने का अभियान शीर्षक से लिखे अपने लेख में निघत अब्बास ने देश के मुस्लिम समाज में डर एवं नफरत पैदा करने वाली राजनीति का सही-सही चित्रण किया है। देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद से ही कई राजनीतिक पार्टियां जातिवाद, मजहब एवं मुस्लिम तुष्टीकरण के आधार पर ही पली और पोषित हुई हैं। कांग्रेस एवं दूसरी अन्य कई पार्टियों ने राष्ट्रवादी संगठनों के खिलाफ दुष्प्रचार करने में अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी। मुस्लिम समाज को आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक रूप से ऊपर उठाने के लिए कोई प्रयास कांग्रेस की सरकारों ने अपने शासनकाल में किया ही नहीं, जिसके कारण देश का अल्पसंख्यक समाज पिछड़ता चला गया। मुस्लिम समाज के कथित ठेकेदारों एवं धर्मगुरुओं ने भी उनका राजनीतिक रूप से शोषण करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अपना राजनीतिक अस्तित्व बनाए रखने के लिए इस वर्ग के दिमाग में कई तरह की भ्रांतियां उत्पन्न करने का काम कथित धर्मनिरपेक्ष पार्टियां करती रहीं। किसी भी सभ्य समाज के लिए यह आवश्यक है कि एक साथ समाज के सभी वर्गों का विकास किया जाए। उन्हें आगे बढ़ने एवं उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए समान अवसर मिले। तीन तलाक कानून को लें तो इन पार्टियों ने इस कानून का बड़े पैमाने पर विरोध करने में अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी। भला हो देश की जागरूक और शिक्षित मुस्लिम महिलाओं का, जिन्होंने इस कानून का डटकर समर्थन दिया। आशा यही की जानी चाहिए कि जैसे-जैसे मुस्लिम समाज जागृत होगा, अपने हक को पहचानना सीख जाएगा। फिर कोई भी इनका राजनीतिक रूप से दुरुपयोग नहीं कर सकेगा।

सुरेश गोयल, हिसार, हरियाणा

मेलबाक्स

अच्छे संस्कार का नतीजा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अभी हाल में भाजपा व सहयोगी दलों के विजयी सांसदों के साथ बैठक में जिस तरह से सादगी व विनयशीलता का परिचय दिया उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। उन्होंने देशवासियों को विनयशील होने का संदेश भी दिया। यह सब संभव हुआ है अच्छे संस्कार से और मां के आशीर्वाद से। वह कभी अपनी मां का आशीर्वाद लेना नहीं भूलते हैं। इस बार भी चुनाव जीतने के बाद मां का आशीर्वाद लेने गए थे। इससे देश के युवाओं को एक संदेश भी जाता है कि उन्हें भी अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए।

डीपी वर्मा, शिप्रा नियो इंदिरापुरम, गाजियाबाद

शर्तों पर मुलाकात

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आम चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को मिले प्रचंड बहुमत ने भारत की धाक विदेशों में और मजबूत की है। दुनिया के देशों ने इस जीत पर मोदी को बधाई दी है। साथ ही परस्पर रिश्ते और मजबूत होने की उम्मीद जताई। प्रधानमंत्री के नई सरकार के शपथ ग्रहण के बाद पहले विदेश दौरे पर मालदीव जाने की संभावना है। 13-14 जून को उन्हें शंघाई सहयोग संगठन की शिखर बैठक में हिस्सा लेना है। इस बैठक में उनका इमरान खान से भी आमना-सामना हो सकता है। पिछले मौके पर मोदी ने दृढ़ता का परिचय दिया था। इस बार मुलाकात भी अपनी शर्तों पर होनी चाहिए।

युधिष्ठिर लाल कक्कड, गुरुग्राम

इच्छा के विरुद्ध

आजकल अधिकांश लोग अपने बच्चों को अपनी मर्जी से करियर चुनने की छूट देने लगे हैं। वे समझने लगे हैं कि बच्चों पर करियर को लेकर की गई जबरदस्ती घातक परिणाम ला सकती है। पर अफसोस कि नेहरू-गांधी परिवार में बच्चों को उनकी इच्छा के विरुद्ध राजनीति में धकेला जा रहा है। राहुल और प्रियंका के साथ यही हो रहा है। बेहतर होगा सोनिया गांधी उन्हें राजनीतिक जिम्मेदारी से मुक्त कर सहज जीवन जीने दें।

डॉ. प्रतिभा अग्रवाल, गुरुग्राम

सभ्यता एवं संस्कृति

जीत के बाद मोदी ने लालकृष्ण आडवाणी व मुरली मनोहर जोशी के घर जाकर पैर छूकर आशीर्वाद लिया, इसके बाद अपनी मां के पास जा कर भी आशीर्वाद लिया। यही देश की परंपरा व संस्कार है। परंतु आधुनिक युग में ये संस्कार छूटते जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने पूरे देशवासियों को भारतीय सभ्यता, संस्कृति व संस्कारों के दर्शन कराएं हैं।

hemahariupadhyay@gmail.com

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
23359961-62, नोएडा कार्यालय : 0120-3915800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं न हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।